क्या यह पक्षी खेती करता है?

हाल में एक अध्ययन के नतीजे प्रकाशित हुए हैं, जिनसे लगता है कि एक पक्षी है जो अपने घोंसले के आसपास पौधे उगाता है। और इस 'जंगल' से तय होता है कि वह नर पक्षी साथी ढूंढने में कितना सफल होगा। अभी यह कहना मुश्किल है कि क्या वह जानबूझकर यह जंगल रोपता है।

धब्बेदार बॉवरबर्ड का नर तिनके जोड़-जोड़कर एक घोंसला बनाता है। घोंसले को बॉवर कहते हैं। यह कुटिया बनाने के बाद वह इसे तरह-तरह की चीज़ों से सजाता है ताकि किसी मादा को रिझा सके। सजावट की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु *सोलेनम एलिप्टिकम* नामक पौधे की बेरियां होती हैं। और लगता है कि अपने घोंसले को सजाने के चक्कर में यह पक्षी उस इलाके में पौधों के वितरण को बदल रहा है।

यूके के एक्सेटर विश्वविद्यालय के जोआ मैडन ने ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैण्ड क्षेत्र में *सोलेनम एलिप्टिकम* के वितरण का अध्ययन किया। यह क्षेत्र धब्बेदार बॉवर पक्षी का प्राकृतवास है। हालांकि ये पक्षी अपना घोंसला उन जगहों पर नहीं बनाते जहां*सोलेनम एलिप्टिकम* की बहुतायत हो, मगर घोंसला बनाने के एक साल बाद हर घोंसले के आसपास औसतन 40 *सोलेनम एलिप्टिकम* पौधे पाए गए। जिन पक्षियों के घोंसलों के आसपास ज़्यादा पौधे थे उनके घोसलों में बेरियां भी ज़्यादा पाई गईं। मैडन यह तो पहले ही देख चुके थे कि बेरियों की संख्या के आधार पर नर पक्षी की संतानोत्पत्ति में सफलता का अच्छा अनुमान लगाया जा सकता है। तो मैडन का अनुमान है कि मुख्य काम घोंसले में बेरियां इकट्ठी करना है। जो बेरियां मुरझा जाती हैं उन्हें यह पक्षी घोंसले से बाहर फेंक देता होगा और वे वहां उग आती होंगी।

इस तरह से बॉवर पक्षी इलाके में *सोलेनम एलिप्टिकम* के वितरण को बदल रहा है। मगर क्या इसे खेती करना कहेंगे? खुद मैडन मानते हैं कि उक्त परिणामों के आधार पर यह तो नहीं कहा जा सकता कि यह पक्षी जानबूझकर पौधे रोप रहा है। मगर साथ ही वे यह भी कहने से नहीं चूकते कि मनुष्य द्वारा खेती की शुरुआत अनायास ही हुई थी। तो फिर बॉवर पक्षी के क्रियाकलापों को भी प्रारंभिक खेती क्यों नहीं माना जा सकता? ***(स्रोत फीचर्स)***